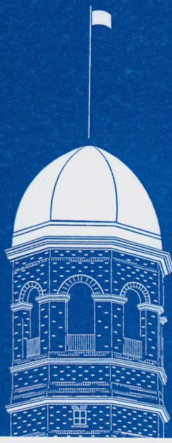

श्री सिद्धान्त दास

विशिष्ठ अतिथि
महानिदेशक, वन एवं विशेष सचिव, पर्यावरण,
वन एवं जलवायु परिवर्तन, भारत सरकार,
का संबोधन

इस दीक्षांत समारोह के मुख्य अतिथि माननीय डा० हर्षवर्धन, पर्यावरण वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री, भारत सरकार; श्री ए० एन० झा, सचिव पर्यावरण वन एवं जलवायु परिवर्तन भारत सरकार, डा० एस०सी० गैरोला, महानिदेशक, भारतीय वन अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद एवं कुलाधिपति वं०अ०सं० सम विश्वविद्यालय, डॉ. सविता, निदेशक वन अनुसंधान संस्थान एवं कुलपति वन अनुसंधान संस्थान सम विश्वविद्यालय एवं विशिष्ठ अतिथिगण, प्रिय विद्यार्थियों, देवियों एवं सज्जनों। सभी को शुभ प्रभात।

वन अनुसंधान संस्थान सम विश्वविद्यालय के चौथे दीक्षांत समारोह के अवसर पर मुझे लोक जीवन, शिक्षण, अनुसंधान तथा औद्योगिक क्षेत्र से पधारे हुए महान विद्वानों की गरिमामयी सभा में उपस्थित होने पर प्रसन्नता हो रही है। यह सभी विद्यार्थियों के लिए महान गर्व एवं उपलब्धि का विषय है, जो अपने संबधित पाठ्यक्रम के सफलतापूर्वक पूर्ण होने पर अपनी डिग्रियाँ प्राप्त करने के लिए इस ऐतिहासिक दीक्षांत गृह में सम्मिलित हुए हैं। मैं आप में से प्रत्येक को इस हेतु बधाई देना चाहूँगा।

जैसा कि हम जानते हैं कि आज भुखमरी, गरीबी, आजीविका तथा जलवायु परिवर्तन एवं ऐसी ही हमारे मध्य बहुत सी चुनौतियाँ हैं जो संयुक्त राष्ट्र के नए सतत् विकास कार्य सूची द्वारा एवं 17 सतत् विकास लक्ष्यों द्वारा संबोधित हुई हैं। 25 सितम्बर 2015 में देशों ने गरीबी उन्मूलन, धरती की सुरक्षा तथा सभी के लिए संपन्नता सुनिश्चित करने के लक्ष्यों को तयकर एक नए सतत् विकास कार्य सूची के रूप में अपनाया। प्रत्येक लक्ष्य को अगले 15 वर्षों तक प्राप्त करने के विशेष उद्देश्य हैं। लक्ष्य संख्या 4 गुणवत्तापूर्ण शिक्षा हेतु है जो अच्छी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की आवश्यकता को संबोधित करता है जो अन्य लक्ष्यों से अंर्तसंबंध रखता है। इससे एस० डी० जी सहित अभिप्रेरित शिक्षित युवा पेशेवरों की अनुभूतियों की ओर आगे बढ़ना अधिक आसान एवं सुविधाजनक होगा।

इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिये सरकारों, निजी क्षेत्रों, सिविल सोसाइटियों एवं आप जैसे प्रत्येक नौजवान को अपने प्रयास करने की आवश्यकता है।

आज आप सभी के लिए यह क्षण इस विश्वविद्यालय एवं कैम्पस के सुरक्षित वातावरण से निकलकर ऐसे परिवेश में पहुंचने के रूप में देखा जा सकता है जहाँ आपको आगे विश्व के वातावरण से सीखना है तथा आपने जो शिक्षा पाई है उससे अपना योगदान देना है। वानिकी क्षेत्र में हमारे वनों की उत्पादकता बढ़ाने, वन आधारित कार्यकलापों से आजीविका उत्पन्न करने, काष्ठ आधारित उद्योगों हेतु कच्चा पदार्थ, प्रदूषण प्रबंधन तथा अन्य कई उपयोगों पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है। हमारे मंत्रालय का उद्देश्य प्रतिपूर्ति वनीकरण, निधि प्रबंधन तथा योजना प्राधिकरण (कैम्पा), हिमालयी अध्ययनों हेतु राष्ट्रीय मिशन, औद्योगिक प्रदूषण के प्रबंधन हेतु क्षमता निर्माण, राष्ट्रीय नदी संरक्षण निदेशालय, हरित कौशल कार्यक्रम, जैसे बड़े प्रयासों के जरिए उनको संबोधन करना है। समस्याओं के बारे मे पर्याप्त जानकारी तथा वानिकी क्षेत्र में अवसर सही व्यवसाय चुनने में आपके लिये सहायक होंगे। इससे वानिकी, पर्यावरण तथा वन्य जीवन विज्ञान में परास्नातक तथा पी०एच०डी० डिग्री धारकों को रोजगार के लिए रास्ते खुलेंगे।

आप विकसित हो रहे हरित कौशलों पर प्रशिक्षण कार्यों में प्रशिक्षक की भूमिका निभा सकते हैं जिसके लिए वानिकी के स्कूलों द्वारा वर्तमान प्रदत्त विभिन्न ज्ञान एवं कौशलों की भी अवाश्यकता हो सकती है। तब आप सभी के लिये कागज एवं लुगदी पौधरोपण, कृषि वानिकी, वन प्रमाणीकरण इत्यादि के निजी औद्योगिक क्षेत्र में व्यापक रोजगार के अवसर होंगे। इस विश्वविद्यालय से उत्तीर्ण होने पर आप सभी बड़े भाग्यशाली हैं जो वास्तव में दक्षिण पूर्व एशिया का सबसे पुराना तथा प्रधान अनुसंधान संस्थान है। इस संस्थान के वन अधिकारियों ने सर्वोत्तम वैज्ञानिक संकाय तथा वानिकी प्रयोगों से आपके पाठ्यक्रम के वानिकी से संबंधित लगभग सभी विषयों पर आपको प्रयोग सहित ज्ञान दिया होगा। मुझे विश्वास है ऐसे ज्ञान को ग्रहण कर आपके सम्मुख आने वाली समस्याओं का समाधान हो जाएगा।

बड़े गर्व की बात है कि अफगानिस्तान, भूटान, नेपाल, श्रीलंका से सार्क एफ.आर.आई. छात्रवृत्ति पाने वाले विद्यार्थी इस

विश्वविद्यालय में अध्ययन हेतु अवसर प्राप्त कर रहे हैं। इससे पता चलता है कि यह विश्वविद्यालय इन कार्यक्रमों के जरिए इसके विद्यार्थियों को अंतर्राष्ट्रीय अनावरण प्रदान करने हेतु अपना सर्वोत्तम प्रयास कर रहा है।

अपने पाठ्यक्रम एवं पाठ्यचर्या के अलावा शिक्षा को वानिकी एवं सत्त कृषि विकास से जोड़ने हेतु ध्यान देना आवश्यक है तथा समाज के विभिन्न क्षेत्रों की आजीविका के संबंध में आय बढ़ाने तथा भोजन सुरक्षा के मध्य भी विशेष संबंधों पर ध्यान देना चाहिए।

वानिकी विशेषज्ञों की भूमिका हित धारकों सहित कार्यक्रमों में प्रतिभागी तथा वन उपयोगकर्ताओं के लिए सलाहकार के रूप में कार्य करना भी है, जिससे सामाजिक कौशलों को आवश्यक रूप से विकसित किया जा सके।

वानिकी शिक्षा के सभी मार्गों में वानिकी शिक्षा कार्यक्रमों को मजबूत करने हेतु प्रविधियाँ तथा हमारे प्रयास अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बनाये रखने तथा विश्व के अन्य क्षेत्रों के इसके विद्यार्थियों के जरिए विश्वविद्यालय की पहुँच बढ़ाने हेतु जारी रखनी चाहिए। कुछ वर्ष पहले वानिकी शिक्षा में एफ0 ए0 ओ0 के परामर्श विशेषज्ञों ने पाया कि बहुधा वानिकी शिक्षा संस्थान राष्ट्रीय वानिकी कार्यसूची के सूत्रीकरण में भाग नहीं लेते हैं। वास्तव में मेरा भी यह दृढ़ विचार है कि वानिकी शिक्षा के सभी स्तर पर संस्थानों के मध्य सहयोगितापूर्ण कार्यकलापों, सूचना साझा करना तथा समकक्ष व्यक्ति की तुलना कर कार्य करना अधिक लाभकारी है । व्यवसायिक संगठन को मजबूत सहायता एवं उत्साहित करना चाहिए। एकीकरण तथा सहयोग सुगम बनाने के लिए रचनातंत्र स्थापित करने की आवश्यकता है जहाँ संबंधित क्षेत्रों में वानिकी में शिक्षा शोध तथा संस्थान को विकसित करना संभव है।

मैं आप सभी से निवेदन करता हूँ कि अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने का प्रयास करते समय सावधानीपूर्वक गंभीरता से कार्य करना है यह आपके सीखने का अंत नहीं है अतः आप एक बंद एवं सुरक्षित कक्षा से एक खुली कक्षा की ओर जा रहे हैं। आपको विद्यार्थी जीवन पर अपने मस्तिष्क को केन्द्रित रखना चाहिए ताकि आप सभी अच्छे ज्ञान के साथ सीखना जारी रखते हुए अपने से संबंधित बड़ी ऊँचाइयों को छू सकेंगे। अंत में मैं पुनः सभी उत्कृष्ट स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों तथा स्कॉलरों को बधाई देना चाहता हूँ जो एफ.आर.आई. सम विश्वविद्यालय के प्रवेशद्वार से सफलतापूर्वक चलकर वानिकीविद् बनने जा रहे हैं तथा मैं आप सभी से आपके देश, माता–पिता, परिवार तथा संबंधित विषय के लिये प्रतिष्ठा तथा यश प्राप्त करने की कामना करता हूँ।

जय हिन्द